शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# शरीर बनावट के आधार पर व्यक्तित्व की नवीन संकल्पनाएँ
## (विलियम एच. शेल्डन के सन्दर्भ में)

डॉ. अमिता जैन
सहायक प्राध्यापक ( शिक्षा संकाय)
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं, राजस्थान, भारत

आधुनिक व्यक्तित्व सिद्धान्तों में जिन मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के जैविक पक्ष पर पर्याप्त प्रकाश डाला है, उनमें विलियम एच. शेल्डन का विशेष स्थान है। उन्होंने शरीर की बनावट के आधार पर व्यक्तित्व के प्रकारों का जो निरूपण किया है, वह उनकी महत्त्वपूर्ण देन है। शेल्डन ने गहन अध्ययन के पश्चात् व्यक्ति के शरीर की बनावट का वर्णन किया है, वह वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। इन्होंने मनोविज्ञान तथा चिकित्सा शास्त्र पर मानव

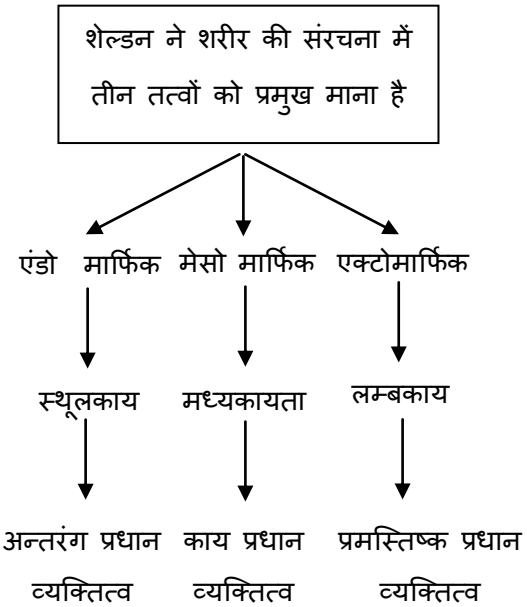


व्यक्तित्व संबंधों की जो नवीन संकल्पनाएँ उपस्थित की, वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

(अ) अन्तरंग प्रधान व्यक्तित्व

शेल्डन एवं उनके सहयोगी (1942) ने मानव स्वभाव के विभिन्न स्वरूपों के संबंध में एक अध्ययन का प्रकाशन ग्रन्थ रूप में किया। इसके आधार पर बिस्काफ ने स्थूलकाय अथवा अन्तरंग प्रधान व्यक्तित्व की कतिपय विशेषताओं का उल्लेख किया।

1. चाल-ढाल में शिथिलता - अन्तरंग प्रधान व्यक्ति अत्यन्त शिथिल एवं लापरवाह होता है। प्रत्येक कार्य ढ़ीले-ढाले तरीके से करता है। तत्परता का उसमें अभाव पाया जाता है। अधिकतर वह शिथिल ढंग से बैठे रहना पसन्द करता है।

2. आराम प्रिय - अन्तरंग प्रधान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अधिक से अधिक आराम पसन्द होते हैं। प्रायः किसी के सहारे से बैठते है और शारीरिक कष्ट से बचने की प्रवृत्ति उनमें पाई जाती है।

3. मन्द प्रतिक्रिया - ये व्यक्ति प्रत्येक कार्य में देर करते हैं। किसी के जगाये बिना उठते नहीं। अधिकतर वे अपने कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। चुस्ती-फुर्ती का उनमें अभाव रहता है।

4. भोजन प्रिय - ये व्यक्ति खाने-पीने के शौकीन होते हैं। अच्छा खाना, विविध प्रकार के व्यंजन

खाना और प्रायः कुछ न कुछ खाते रहना इनकी विशेषता होती है।

5. पाचन क्रिया में आनन्द - भोजन के साथ-साथ ये व्यक्ति पेट पर हाथ फेरने में और पाचन क्रिया में भी आनन्द लेते हैं। उत्सवों आदि में यह प्रवृति अधिक दिखाई पड़ती है।

6. भोज देने के शौकीन - ये व्यक्ति भोजन-प्रिय होते हैं और भोजन उनकी सामाजिक गतिविधि का एक प्रधान अंग भी बन जाता है। वह लोगों को भोजन पर अपने घर आमंत्रित करता है और भांति-भांति के व्यंजन खिलाने का शौक रखता है।

7. शिष्टाचार प्रिय - इन व्यक्तियों को अन्य लोगों के साथ बैठकर शिष्ट एवं सभ्य व्यवहार करने में सुख की अनुभूति होती है। ये व्यक्ति रीति-रिवाजों के पालन में भी आगे रहते है। किसी अन्य व्यक्ति के घर किसी समारोह में वे अपनी पूरी शक्ति तथा समय देने में पीछे नहीं हटते।

8. जनप्रिय - ये व्यक्ति सदैव लोगों से घिरे रहना पसन्द करते हैं। लोगों से मेल-जोल बढ़ाना इनकी एक प्रमुख विशेषता है।

9. अविवेकी मिलनशीलता - ये व्यक्ति मेल-जोल बढ़ाने के इतने शौकीन होते हैं कि बिना सोचे समझे कि किससे बात करनी चाहिए और किससे नहीं, वे हरेक से दौड़कर मिलते है।

10. अनुमोदन प्रिय - ये व्यक्ति सदैव यह सोचते हैं कि जो भी कार्य करें, अन्य व्यक्ति उसका अनुमोदन करे। यदि उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि लोग उसका अनुमोदन नहीं कर रहे हैं तो वे चिन्तित हो जाते हैं और दूसरों का अनुमोदन पाने का प्रयास प्रारम्भ कर देते हैं।

11. जन अभिविन्यास - इन व्यक्तियों के व्यक्तित्व की यह विशेषता होती है कि वे जिस भी अच्छी वस्तु को देखते हैं, उससे संबंधित व्यक्तियों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। आंतरांग प्रधान व्यक्तित्व वाले व्यक्त्यिों की लोकप्रियता का एक कारण यह भी है।

12. सतत प्रसन्नता - अन्तरंग प्रधान व्यक्तित्व की यह विशेषता होती है कि ये व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहते हैं। चिन्ता का अनुभव नहीं करते। हर स्थिति में इनका प्रसन्न रहना कभी-कभी दूसरों की ईष्या का कारण भी बन जाता है।

13. सहिष्णुता - ये व्यक्ति अत्यधिक सहिष्णु होते हैं। लोगों की भूलों एवं अपराधों को शीघ्र क्षमा कर देते है। इनमें सहन-शक्ति अधिक होती है।

14. संतोष की प्रवृति - अन्तरंग प्रधान व्यक्तियों में अत्यधिक संतोष पाया जाता है। इनमें निराशा बहुत कम होती है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ये असंतुष्ट नहीं होते हैं।

15. गहन निद्रा - अन्तरंग प्रधान व्यक्ति चिन्तामुक्त होने के कारण गहन-निद्रा में सोते हैं। आस-पास तेज आवाजें होने पर भी इनकी निद्रा भंग नहीं होती।

16. समन्वयवादी - अन्तरंग प्रधान व्यक्ति समन्वयवादी होते हैं। समस्या के दोनों पक्षों पर ध्यान देकर उनका समाधान निकाल लेते हैं।

17. सरल स्वभाव - ये व्यक्ति अत्यन्त सरल स्वभाव के होते हैं। अपनी भावनाओं को बिना छुपाए सहजता से दूसरों के सम्मुख प्रकट करते हैं।

18. मादकता की प्रवृति - अन्तरंग प्रधान व्यक्ति मादक द्रव्य के प्रभाव में आकर शिथिलता का अनुभव करते हैं। उनके बोलने की

प्रवृति बढ़ जाती है। वे लोगों से बातें करना या गाने गाना प्रारम्भ कर देते हैं।

19. दुःख में साथी की खोज - अन्तरंग प्रधान व्यक्ति जब किसी कठिनाई में पड़ जाते हैं तो अपने पास अधिक से अधिक समय के लिए किसी साथी की उपस्थिति चाहते हैं। अपनी समस्याओं के बारे में दूसरों से सदैव बातचीत करते रहते हैं।

20. बाल्यकाल एवं पारिवारिक संबंधों के प्रेमी - आंतरांग प्रधान व्यक्ति का जीवन बच्चों के समान होता है। वे सरल और निश्चल तथा सहज स्वभाव के होते हैं और जीवन का पूरा आनन्द लेते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को सुखी रखना चाहते हैं। दूसरों की कठिनाइयों को भी समझ लेते हैं। इसलिए अन्य लोग उन्हें अधिक पसन्द करते हैं।

(ब) कायप्रधान व्यक्तित्व

कायप्रधान व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों की शरीर रचना सुगठित एवं सुडौल होती है। इनमें शारीरिक शक्ति अधिक होती है। ये व्यक्ति अपने शरीर और स्वास्थ्य की ओर अधिक ध्यान देते है। शेल्डन ने कायप्रधान व्यक्तित्व में पाये जाने वाले निम्न लक्ष्यों का उल्लेख किया है।

1. कठोर धनी - कायप्रधान व्यक्तित्व सदैव कार्य के लिए तत्पर रहते हैं। कठोर शारीरिक कार्यों को करने में उन्हें संतोष मिलता है।

2. व्यायाम की आवश्यकता - शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ये व्यक्ति व्यायाम किया करते हैं। यहां तक कि मनोरंजन भी वे ऐसे कार्यों अथवा खेलों द्वारा करते हैं जिनमें शारीरिक क्रियाओं की प्रधानता होती है।

3. स्वाग्रही - कायप्रधान व्यक्ति कार्य तेजी से करता है और इस ढंग से करता है कि उसकी शान उससे प्रकट हो। वह कार्यों को इस ढंग से करता है कि लोग उसे देखे।

4. ओजस्वी एवं कर्मठ - ये व्यक्ति अत्यन्त कर्मठ होते हैं और उनके कार्यों से ओज प्रकट होता है।

5. प्रभुत्व प्रिय - इन व्यक्तियों में नेतृत्व की प्रवृति दिखलाई पड़ती है। प्रत्येक परिस्थिति में वे अपना स्थान अन्य लोगों से ऊँचा बनाए रखते हैं और अपने व्यवहारों द्वारा अपने को श्रेष्ठ प्रमाणित करते हैं।

6. संकट प्रिय - ये व्यक्ति सदैव ऐसे अवसरों की खोज में रहते हैं, जिनमें संकट हो और ऐसे संकटपूर्ण परिस्थिति में वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सके। ऐसी स्थितियों में उनकी नेतृत्व की प्रवृति भी प्रदर्शित होती है। वे आगे बढ़कर कार्य करते है। खतरों का सामना करके उन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

7. निडर - ये व्यक्ति बात एवं व्यवहार में निडर होते हैं। बिना किसी भय के स्पष्ट बातें करने में हिचकिचाते नहीं।

8. साहसी - कायप्रधान व्यक्तित्व अत्यधिक साहसी होते हैं, ऐसे कार्यों में सदैव आगे रहते हैं, जिनमें साहस की आवश्यकता होती है। जैसे युद्ध में सैनिक का कार्य।

9. आक्रामक प्रतियोगी - ये व्यक्ति जब किसी प्रतियोगिता में भाग लेते हैं तो विजय प्राप्त करने के लिए आक्रामक प्रवृति भी अपना लेते हैं और अपनी शक्ति तथा प्रभुत्व का प्रदर्शन करते हैं।

10. कठोर हृदय - कायप्रधान व्यक्तियों में दया, सहानुभूति का प्रायः अभाव पाया जाता है। इनका हृदय कठोर होता है और इनमें स्वार्थपरता अधिक पाई जाती है। दुःखद परिस्थितियों में भी रोना ये चरित्र की दुर्बलता समझते हैं।

11. बन्द स्थान का भय - ये व्यक्ति कभी बन्द स्थान पर रहना पसन्द नहीं करते। सदैव खुले स्थानों पर ही रहना चाहते हैं।

12. उच्च एवं स्पष्ट स्वर - ये व्यक्ति मंद स्वर से बात कहना पसंद नहीं करते। सदैव उच्च और स्पष्ट स्वर में बोलते हैं। प्रत्येक बात साफ - साफ कहते हैं और पूरे विश्वास के साथ कहते हैं।

13. पीड़ा के प्रति उदासीन - इन व्यक्तियों की दृष्टि में पीड़ा का कोई महत्त्व नहीं होता। पीड़ा का अनुभव करना ये दुर्बलता समझते हंै। इसलिए अपनी अथवा किसी दूसरे की पीड़ा के प्रति वे प्रायः उदासीन रहते हैं।

14. कोलाहल प्रिय - ये व्यक्ति जहां कहीं भी जाते हैं, एक कोलाहल सा उत्पन्न हो जाता है। आकर्षक वस्त्रों अथवा ऊँची आवाज में बोलकर वे दूसरों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। प्रत्येक कार्य को वे तेजी और झटके से करते हैं ताकि दूसरे उसे देख सकें।

15. अति-परिपक्व - ये व्यक्ति अपनी अवस्था से अधिक परिपक्व दिखलाई पड़ते हैं। शारीरिक कार्य अत्यधिक करने से उनमें शारीरिक परिपक्वता भी समय से पहले आ जाती है।

16. रूढ़िवादी - ये व्यक्ति रूढ़िवादी विचारधारा के होते हंै। नवीन चिंतन कर सकना इनके लिए कठिन होता है। ये जो कुछ भी कहते हैं, उसे पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं। किसी समस्या पर गहराई से चिंतन करने, किसी नवीन तथ्य को प्राप्त करने की प्रवृति इनमें नहीं पाई जाती।

17. धार्मिकता का अभाव - कायप्रधान व्यक्तित्व जब किसी कार्य को करते हैं तो उसमें धार्मिक पक्ष की ओर ध्यान नहीं देते और न ही उनमें धर्म से भयभीत होने की प्रवृति दिखलाई पड़ती है। उनका मुख्य उद्देश्य होता है अपने कार्य को पूर्ण करना और इसके लिए वह धर्म की ओर अधिक ध्यान नहीं देते।

18. मादक द्रव्य सेवन करने से आक्रामक - कायप्रधान व्यक्ति जब मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं तो उसके प्रभाव से उनमें शिथिलता नहीं आती,बल्कि ये और भी सक्रिय, आक्रामक तथा हठधर्मी हो जाते हैं। किसी भी बात पर ध्यान नहीं देते।

19. कठिनाई में सक्रिय - ये व्यक्ति जब किसी कठिन परिस्थिति में पड़ जाते हंै तो स्वयं अपने प्रयासों से कठिनाई को दूर करने के लिए सक्रिय हो जाते हैं और अन्ततः उस पर विजय पाते हैं।

20. लक्ष्य के प्रति समर्पित - कायप्रधान व्यक्ति में नेतृत्व की प्रवृति अधिक पाई जाती है। वे सदैव दूसरों से आगे रहना चाहते हंै। अतः वे सदैव ऐसे कार्यों को करते हैं, जिनमें से अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकें। ये व्यक्ति बौद्धिक कार्यों की तुलना में शारीरिक कार्यों को अधिक करते हैं। अतः जिस क्षेत्र में शारीरिक श्रम का विशेष महत्त्व होता है, वहां कायप्रधान व्यक्ति सरलता से लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं।

(स) प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तित्व

प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तित्ववाले व्यक्तियों का शारीरिक आकार-प्रकार दुबला-पतला तथा लम्बा होता है। शारीरिक शक्ति का इनमें अभाव होता है। लेकिन बौद्धिक कार्यों तथा चिन्तन में इनकी शक्तियां विशेष रूप से प्रदर्शित होती है। शेल्डन तथा उनके सहयोगियों ने प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तियों के व्यक्तित्व में निम्न लक्षणों का उल्लेख किया है।

1. संयम - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति जो भी कार्य करते हैं उनमें एक प्रकार का संयम

दिखलाई पड़ता है। उनमें शिथिलता का अभाव होता है।

2. यन्त्रवत् शारीरिक क्रियाएँ - इन व्यक्तियों का शरीर प्रायः यन्त्र की तरह कार्य करता है। संकट के समय वे अत्यन्त तीव्र गति से कार्य करते हैं।

3. शीघ्र प्रतिक्रिया - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति किसी भी उत्तेजक परिस्थिति के प्रति तत्काल प्रतिक्रिया करते हैं। यही कारण है कि उनके कार्यों को पूरा होने में कम समय लगता है। उनके द्वारा किए गए कार्य पूर्णता लिए हुए होते हैं और उन कार्यों को करने में उन्हें अतिरिक्त शक्ति नहीं लगानी पड़ती। स्वाभाविक गति से कार्य करने पर भी वह कार्य कम समय में पूरा हो जाता है।

4. एकान्त प्रिय - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति एकान्त प्रिय होते हैं। वे खाना-पीना, पढ़ना-लिखना और यहां तक कि मनोरंजन भी एकान्त में ही करना पसन्द करते हैं।

5. उच्च मानसिक सक्रियता - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तियों का मस्तिष्क अत्यधिक सक्रिय होता है। ये जो भी कार्य करते हैं अत्यन्त ध्यान लगाकर करते हैं। मस्तिष्क की अधिक क्रियाशीलता के कारण ये व्यक्ति निरन्तर मानसिक कार्यों में संलग्न रहते हैं।

6. भावात्मक संयम - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तियों की एक विशेषता यह भी है कि वे अपनी भावनाओं को दूसरे के सामने प्रकट नहीं करते। उनमें गोपनीयता की मात्रा अधिक पाई जाती है। अपने संवेगों तथा भावनाओं के प्रदर्शन को वे संयमित रखते हैं। प्रायः अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करते ही नहीं।

7. संकोचशील

प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति खुले स्वभाव का न होकर संकोचशील होता है। उनमें हाव-भाव, चाल-ढाल तथा व्यवहार में सदैव एक प्रकार का संकोच दिखलाई पड़ता है।

8. खुले स्थान का भय - ये व्यक्ति एकान्त प्रेमी होते हैं। अपना अधिकांश समय अकेले व्यतीत करना चाहते हैं। खुले स्थानों पर रहना उन्हें असुविधाजनक लगता है। अकेले बन्द कमरे में बैठकर पढ़ना लिखना अथवा चिन्तन करना इन्हें अधिक प्रिय होता है।

9. जनसमूह से भय - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति अकेले रहना अधिक पसन्द करता है इसलिए वह जन समुदाय से दूर-दूर ही रहना चाहता है। सामाजिक उत्सवों में भी वह सम्मिलित नहीं होता क्योंकि उससे उसका एकान्त भंग होता है।

10. सीमित सामाजिक सम्बन्ध - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति लोगों से दूर-दूर ही रहता है। इस कारण उसके सामाजिक सम्बन्ध अत्यन्त सीमित होते हैं।

11. आदत से बचाव - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तियों के दैनिक कार्यों में एकरूपता नहीं पाई जाती है। वे अपने नित्य प्रति के कार्यों को इस प्रकार बदल-बदल कर करते हैं जिससे उन्हें किसी चीज अथवा किसी कार्य की आदत न पड़ जाये।

12. अनिश्चित अभिवृत्ति - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति अपने विचारों को गोपनीय रखता है, इसलिए उसके सम्बन्ध में यह अनुमान लगाना कठिन होता है कि किस व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति वह किस प्रकार की अभिवृत्ति प्रदर्शित करेगा।

13. वाणी में संयम - ये व्यक्ति शांत स्वभाव के होते हैं। चुने हुए शब्दों में धीमी गति से अपनी बात को स्पष्ट रूप से कहते हैं। ये शीघ्र उत्तेजित नहीं होते, बल्कि संयम के साथ बातचीत करते हैं।

14. संवेदनशील - शारीरिक तथा मानसिक आघातों के प्रति ये अधिक सहनशील होते हैं। अपनी तथा दूसरों की पीड़ा का अनुभव अत्यधिक गहराई से करते हैं।

15. थकान तथा अनिद्रा - प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्ति निरन्तर मानसिक क्रियाओं में संलग्न रहते हैं। सदैव ये कुछ न कुछ सोचते रहते हैं। विश्राम अथवा शयन के समय भी इनके मस्तिष्क में अनेकों विचार उत्पन्न होते रहते हैं और ये उनमें उलझे रहते हैं। इस कारण ये शांतिपूर्वक सो नहीं पाते और थकान से ग्रस्त रहते हैं।

16. अन्तर्मुखी - ये व्यक्ति प्रायः अन्तर्मुखी होते हैं, एकान्त में रहना, निरन्तर चिन्तन करना, समस्या की गहराई में जाकर उसे समझना आदि प्रमस्तिष्क प्रधान व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता होती है।

17. आयु का न्यूनानुमान - इन व्यक्तियों को देखकर इनकी सही आयु का पता लगाना कठिन होता है, क्योंकि सदैव ये अपनी आयु से कम प्रतीत होते हैं। दूसरे शब्दों में ये नित्य युवा दिखाई पड़ते हैं। आयु का इन पर कम प्रभाव पड़ता है।

18. मद्य त्यागी - ये व्यक्ति सभा-सोसाइटी तथा क्लब आदि में जाना पसन्द नहीं करते। एकान्त स्थान में मद्य पान करने से आनन्द नहीं मिलता। इसलिए ये व्यक्ति मद्य का परित्याग कर देते हैं।

19. दुःख में एकान्त की खोज

ये व्यक्ति दूसरों के सम्पर्क में कम रहना चाहते हैं। इसलिए इन पर जब कोई दुःख या विपत्ति पड़ती है तो वे दूसरों की मदद न लेकर एकान्त में चले जाते हैं और अकेले ही अपनी कठिनाइयों को सुलझाने का प्रयास करते हैं।

20. प्रौढ़ आयु के प्रति उन्मुख - हालांकि ये व्यक्ति अपनी आयु से कम दिखाई पड़ते है, लेकिन इनका व्यवहार इस प्रकार का होता है जो उससे अधिक आयु वाले व्यक्तियों से अपेक्षित होता है। किशोरावस्था में भी उसके व्यवहारों में प्रौढ़ों के समान गम्भीरता पाई जाती है।

## निष्कर्ष

विलियम एच. शेल्डन ने शरीर की संरचना के आधार पर व्यक्तित्व को तीन भागों में वर्गीकृत किया है। आंतरांग प्रधान या एण्डो मार्फिक व्यक्तित्व ये आराम प्रिय, चुस्ती फुर्ती का अभाव, भोजन प्रिय, शिष्टाचार प्रिय, अनुमोदन प्रिय, जन अभिविन्यास, सदैव प्रसन्न रहना, समन्वयवादी व सरल स्वभाव के धनी होते हैं। काय प्रधान या मेसो मार्फिक व्यक्तित्व शरीर से सुडौल व सुगठित होते हैं, कार्य के लिए सदैव तत्पर, शारीरिक क्रियाओं में रूचि, कार्य का दिखावापन, कर्मठ, नेतृत्व करने में रूचि, खतरों में विषय पाने की प्रवृत्ति, निडर, साहसी, आक्रमक प्रवृत्ति, कठोर हृदय, स्पष्टवादी, आकर्षक वस्त्रों में रहना, रूढ़िवादी, कठिनाई में सक्रिय तथा लक्ष्य के प्रति समर्पित होते है।

प्रमस्तिष्क प्रधान या एक्टोमार्फिक व्यक्तित्व संयमी, एकान्त प्रिय, संकोचशील, उच्च मानसिक सक्रियता, अन्तर्मुखी, थकान तथा अनिद्रा, जन समूह से भय, संवेदनशील व सीमित सामाजिक सम्बन्ध पाया जाता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

*1. अस्थाना, मधु व वर्मा, किरन बाला 2012 चतुर्थ संस्करण, व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।*

*2. यादव, सियाराम 2008 अधिगम प्रक्रिया, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*

*3. मंगल, एस. के. 2008 शिक्षा मनोविज्ञान, प्रिंटिस हाल आफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।*

*4. गुप्ता, एस. पी. व गुप्ता अलका 2007 उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*

*5. शर्मा, गणपत राय, व्यास हरिश्चन्द्र 2007 अधिगम-शिक्षण और मनोसामाजिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*